स्त्री शिक्षा पर रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार

धर्मेन्द्र कुमार सिंह

असिस्टेन्ट प्रोफेसर
शिक्षक शिक्षा विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय),
प्रयागराज

मानव सभ्यता के उद्विकास से लेकर आधुनिक, वैश्विक युग तक भारतीय समाज में नारी की स्थिति समय काल और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होती रही है। एक प्रकार से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के दृष्टिकोण से देखा जाये तो इस उतार–चढ़ाव वाले परिवर्तनशील इतिहास में महिलाओं ने कुछ कालों में विशेष एवं अहम् भूमिका निभायी है, तथा साथ ही ऐसे युग भी थे जिनमें महिलाओं को विभिन्न कुरीतियों की मार सहनी पड़ी है एवं विभिन्न प्रकार की यातनाएँ झेलनी पड़ी है और इन सबका कारण हमारी सामाजिक संरचना में ही छिपा हुआ है अर्थात् महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति एवं भूमिका बहुत कुछ समाज की संरचना एवं आकार ही निर्धारित करते है, इसीलिये ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में दृष्टिपात किया जाये तो प्रतीत होता है कि विभिन्न कालों में महिलाओं की भूमिका एवं स्थिति परिवर्तनशील रही है।

भारतीय समाज में नारी की स्थिति बड़ी उतार–चढ़ाव वाली रही है और किसी भी समाज में जब स्त्री की स्थिति एवं सम्मान की बात की जाती है तो कुछ पहलुओं पर विचार एवं विश्लेषण करना आवश्यक सा प्रतीत होता है जैसे– उक्त समाज में स्त्री शिक्षा का क्या स्तर है? महिलाओं की परिवार एवं निर्णय प्रक्रिया में क्या भागीदारी है? सम्पत्ति विषयक अधिकार, स्वतंत्रता सम्बन्धी अधिकार' आदि।

इस काल में स्त्रियों को धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से सुदृढ़ स्थान प्राप्त था। विवाह सम्बन्धी प्रतिबन्ध नहीं थे यदि कन्या चाहे तो आजीवन कुमारी रह सकती थी, ज्ञानार्जन में जीवन व्यतीत करने वाली कुमारिकाओं को ब्रह्मवादिनी कहा जाता था। इस काल में नारियों द्वारा समस्त अधिकारों का पर्णूतया उपभोग किया जाता था। स्त्री के बिना कोई भी धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न नहीं होता था, स्त्री को अर्द्धांगिनी की संज्ञा दी गयी थी। पति–पत्नी के सम्बन्ध समता एवं माधुर्य भाव से होते थे किन्तु फिर भी पितृ प्रधान समाज हाने से पत्नी पर पति की प्रभुता मानी जाती थी। ए0एस0 अल्टेकर के अनुसार, ''तद्युगीन समाज में पत्नी की पति के प्रति आधीनता आदर भाव से पूरित थी इस अधीनत्व के बावजूद पत्नियाँ तद्युगीन गृहों

का आभूषण मानी जाती थी।'' इस काल में पर्दा प्रथा तथा सती प्रथा का पर्णूतया अभाव था। यदि कोई स्त्री विधवा होती थी तो उसे पुर्नविवाह एवं नियोग प्रथा से पुत्र उत्पन्न करने की छूट थी इसलिये विधवाएँ भी समाज पर भार नहीं थी। अतः कहा जा सकता है कि इस युग में स्त्रियों सम्बन्धी रुढ़ियों का जन्म नहीं हुआ था। इस काल में यदि कन्या विवाह नहीं करती थी तो पिता की सम्पत्ति में से कन्या को उत्तराधिकार दिया जाता था परन्तु वैदिक काल में सामान्यतया कन्या की गणना उत्तराधिकारियों में नहीं की जाती थी, केवल वही कन्या जिसका भाई नहीं होता था, पिता की सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी मानी जाती थी। उपर्युक्त सम्पत्ति विषयक अधिकार परिस्थितिनुसार सीमित रूप में प्राप्त तो थे परन्तु साधारणतया जन साधारण में यही धारणा थी कि पुत्री को पिता की सम्पत्ति में कोई भाग नहीं मिलना चाहिये। एक प्रकार से इस काल में विवाह के समय पिता द्वारा कुछ धन पुत्री को उपहार स्वरूप दिया जाता था जिसे 'स्त्री धन' कहा जाता था, बस स्त्री उसी 'स्त्रीधन' की स्वामिनी हाती थी।

समाज के अस्तित्व एवं विकास में स्त्री और पुरुष दोनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है किन्तु जैसे–जैसे समय गुजरता गया स्त्री को अलग–थलग करके पुरुष ने सारी सत्ता अपने हाथों में ले ली। और जिस तरह वह धन, सम्पत्ति तथा जमीन पर अपना अधिकार समझता था उसी तरह उसकी नजर में स्त्री भी एक सम्पत्ति बन गई। प्राचीन काल विशेष वैदिक युग में स्त्रियों को गरिमापूर्ण जीवन स्थितियाँ प्राप्त थी। उन्हें शिक्षा, सम्पत्ति आदि के अधिकारों के साथ ही निर्णय लेने की स्वतंत्रता भी थी। उमा चक्रवर्ती 'जाति समस्या में पितृसत्ता' में इसका खण्डन करते हुए लिखती है कि 'भारतीय समाज में आदिकाल से ही स्त्रियों की स्थिति दयनीय थी। बाद में नवजागरण काल में विदेशियों द्वारा भारतीय समाज की असभ्यता और बर्बरता के सवाल उठाने पर समाज सुधारकों ने इतिहास को गौरवशाली बनाने के लिए स्त्रियों का महिमामंडन किया।

इन्हीं महान समाज सुधारकों में रवीन्द्र नाथ टैगोर ने स्त्रियों को पुरुषों के समान दर्जा, उनके अधिकार दिलाने में अपने पूरजोर कोशिश की तथा स्त्रियों को शिक्षित करने के लिए विशेष तौर पर अपने विचारों एवं कोशिशों से स्त्रियों को सशक्त करने का प्रयास किया है जिससे उनके प्रयास वर्तमान समय में प्रासंगिक हुये। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने भारतीय शिक्षा के विकास में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उन्होंने सामान्य जन को सहजता पूर्वक जीवन व्यतीत करने का समय–समय पर निर्देशन दिया है, क्योंकि जीवन की गति सत्य है, समय के चक्र में वह चलता ही जाता है। जीवन जीने की जिसकी जितनी अद्भुत कला होती है वह उतनी ही प्रवीणता से जीवन के मूल भूत सुखों को अर्जित करने में सफलता हासिल करता है। इसलिए जीवन की कला को सीखने समझने व उस पृष्ठभूमि में पारंगत होने की अनोखी कला का समुचित प्रदर्शन रवीन्द्रनाथ टैगार जी ने अपनी शिक्षा दर्शन में प्रयुक्त किया है, जो भारतीय

आदर्शों को स्थापित करते हुए जीवन के यथार्थ एवं मानववादी अद्भुत दृष्टिकोणों के विकास पर सतत् बल देता है। उन्होंने आन्तरिक शुद्धता के साथ–साथ सामाजिक समरसता को जीवन का प्रमुख हेतु बतलाया है, जो भारतीय दृष्टिकाणे का पक्षधर है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर स्त्री को ईश्वर की श्रेष्ठतम् रचना मानते थे। उनके अनुसार ''स्त्री और पुरुष का पद समान है, पर दोनों के रूप में भिन्नता है। इन दोनों की जोड़ी सर्वश्रेष्ठ है।क्योंकि वे एक दूसरे के अभाव की पूर्ति करते हैं। इसलिये एक दूसरे के बिना रहने की कल्पना नहीं की जा सकती। अतः यह सोचना आवश्यक है कि यदि एक के पद को आघात लगता है, तो दूसरे की हानि और बर्वादी होती है। उन्होंने बताया कि मुख्य रूप से स्त्री को पत्नी, माता और समाज के निर्माता के रूप में कार्य करना होता है। उन्होंने स्त्री शिक्षा पर बहुत जोर दिया था। अपने शिक्षा सम्बन्धी लेखों तथा भाषणों में उन्होंने स्त्री को बहुत महत्वपर्ण बताया। उन्होंने कहा कि बच्चों का पालन एवं उनकी आदतों को परिष्कृत कर योग्य नागरिक बनाने में स्त्रियों का विशेष योगदान होता है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियाँ, पुरुषों का हाथ बँटाती हैं। प्राचीन भारत का उदाहरण देते हुए रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा कि वैदिक कार्य मे अनेक विदुषी स्त्रियाँ थीं, जिन्होंने वेद, मंत्रों की रचना की उस समय का भारतीय समाज शिक्षा नीति, राजनीति, धर्म एवं अर्थ की दृष्टि से वर्तमान समाज से कहीं अधिक उन्नत था।

टैगोर का मत था कि विशुद्ध ज्ञान अन्तर्गत स्त्रियों तथा पुरूषों दोनों को समान रूप से शिक्षा दी जानी चाहिए और उनकी शिक्षा में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए। टैगोर स्त्रियों को पाक–कला, सिलाई–कढ़ाई तथा कला–कौशल की शिक्षा देने पर बल देते थे।

उन्होनें स्त्रियों को गृह कार्य की शिक्षा देने पर विशेष बल दिया और कहा कि उनके रुचि और रुझान को अवश्य ध्यान में रखा जाये। उन्होंने बेसिक शिक्षा का सामान्य पाठय्क्रम संचालित करने का प्रस्ताव पेश किया, जिसके अनुसार पाँचवीं कक्षा तक छात्र–छात्राओं का विषय समान है, केवल चौथी कक्षा मे छात्राओं के लिए गृह विज्ञान का विषय शामिल कर दिया। छठीं और सातवीं कक्षा में बेसिक काम के स्थान पर छात्राओं को गृह विज्ञान विषय लेने की छूट थी। वर्द्धा शिक्षा योजना में माता–पिता को यह अधिकार दिया गया कि यदि वे सह शिक्षा के पक्ष में नहीं है, तो बारहवीं कक्षा में भी बालिकाओं को सह शिक्षा देने के पक्ष में रहे। रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार इस शिक्षा के प्रति बहुत महत्वपर्ण हैं। यदि हम एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, परन्तु एक स्त्री को शिक्षित करने का मतलब है एक परिवार को शिक्षित करना।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार वेदों में भी इसी शिक्षा का समर्थन किया गया है– ''इंद्रम् मंत्रम् पत्नी पठते'' अर्थात् यह मंत्र पत्नी पढ़े। वेद के इस मंत्र से प्रकट है कि पत्नियाँ शिक्षित

होंगी तो यज्ञ में सम्मिलित हो सकेंगी। अतः स्त्री को पुरुष के समान शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। इसी शिक्षा पर अधिकाधिक बल देते हुए रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि बाह्य प्रवृत्ति में पुरुष प्रमुख होतें है। इसलिए वाह्य प्रवृत्ति का विशेष ज्ञान उसके लिए आवश्यक है। आन्तरिक प्रवृत्ति में स्त्री प्रमुख होती है। इसलिये गृह व्यवस्था और बाल–बच्चों की शिक्षा–दीक्षा आदि विषयों का विशेष ज्ञान उसके लिए आवश्यक है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी बात को और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा मुझे जब–जब अवसर मिलता है, तब–तब मैं पुकार–पुकार कर कहता हूँ कि जब तक भारत में स्त्री शिक्षा का प्रसार न होगा। स्त्रियाँ तनिक भी दबी रहेंगी अथवा उन्हें पुरुषों की अपेक्षा कम अधिकार प्राप्त होंगे। तब तक भारत का सच्चा उद्धार न होगा, इसलिये स्त्री शिक्षा पर ध्यान दो।

स्त्री शक्ति की सजीव प्रतिमा है। मनु ने कहा है कि जहाँ स्त्रियों का आदर होता है, वहाँ देवता प्रसन्न रहते हैं और जहाँ उनका आदर नहीं होता, वहाँ सारे कार्य और प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं। स्त्रियों की अनेक समस्याओं का समाधान शिक्षा द्वारा ही हो सकता है। स्त्रियों की शिक्षा का केन्द्र कर्म हो। धार्मिक शिक्षा–चरित्र संगठन और ब्रह्मचर्य पालन–इन्हीं पर अधिक ध्यान देना चाहिए। भारतीय स्त्री का आदर्श सीता का चरित्र होना चाहिए। उन्हें त्याग की शिक्षा दी जाए। स्त्रियों की स्थिति में सुधार के लिए एकमात्र उपाय शिक्षा है। शिक्षा से ही उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न होगा और वे स्वयं अपनी सहायता कर सकेंगी। स्त्रियों की शिक्षा में धार्मिक शिक्षा आवश्यक है।

उन्होंने स्त्रियों में त्याग और सेवा का आदर्श उत्पन्न करने की सलाह दी। पुरुषों के समान स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य के आदर्श का पालन करना चाहिए। स्त्रियों को शिक्षा देने के लिए स्त्री शिक्षकों में उच्च चरित्र की आवश्यकता है। स्त्री शिक्षा स्त्रियों के द्वारा ही दी जानी चाहिए। ये विवाहित अथवा अविवाहित अथवा विधवा कोई भी हो सकती है, किन्तु सर्वत्र उच्च चरित्र अत्यन्त आवश्यक है। इसके अभाव में किसी भी स्त्री को शिक्षक होने का अधिकार नहीं है। केवल धनोपार्जन के लिए शिक्षण कार्य ग्रहण करना उपयुक्त नहीं है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर पुरूषों के समान स्त्रियों को भी शिक्षित करना चाहते थे और स्त्रियों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था पर बल देते थे। उनके अनुसार स्त्री शिक्षा की प्रगति उसी प्रकार से होनी चाहिए जिस प्रकार पाश्चात्य देशों में हुयी है। क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही स्त्रियाँ, पुरूषों के समान कार्य कर पायेगी तथा हमारा समाज और देश प्रगति के पथ पर अग्रसर हो पायेगा। अतः टैगोर स्त्री शिक्षा का समर्थन करते थे तथा स्त्री पुरूष दोनों को समान रूप से शिक्षा देने के पक्ष में थे क्योंकि उनका यह मानना था कि इस समानता से ही मानव समाज का नवनिर्माण हो सकता है और स्त्रियों का समाज में स्तर ऊँचा उठ सकता है। टैगोर का मत था कि विशुद्ध ज्ञान के क्षेत्र में पुरूष एवं स्त्रियों में कोई अन्तर नहीं होना चाहिए। उनके अनुसार

स्त्रियों को परिपक्व मानव प्राणी और उचित स्त्री बनाने के लिये उन्हें विशुद्ध एवं उपयोगी ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए इस प्रकार टैगोर स्त्रियों को शिक्षित करके मानव समाज का उत्थान करना चाहते थे। टैगोर का यह मत था कि स्त्रियों की शिक्षा की अलग से व्यवस्था की जाये और उनके लिये अलग से विद्यालय स्थापित किये जाये किन्तु यदि स्त्रियों के लिये पृथक विद्यालय खोलना सम्भव न हो तो वहाँ वह सह–शिक्षा प्रणाली का समर्थन करते है जहाँ पर स्त्रियों को भी उसी प्रकार शिक्षित किया जाये जिस प्रकार पुरूषों को किया जाता हो अथवा स्त्रियों को भी समस्त शैक्षिक सुविधायें प्रदान की जाये और उन्हें प्रगति के समान अवसर प्रदान किये जाये ताकि वह भी जीवन के प्रत्येक विभाग में समानता के साथ कार्य कर सके। टैगोर ने ज्ञान के दो विभाग माने है। उनके अनुसार प्रथम विभाग विशुद्ध ज्ञान का है तथा दूसरा विभाग उपयोगी ज्ञान का होता है। टैगोर का मत था कि विशुद्ध ज्ञान अन्तर्गत स्त्रियों तथा पुरूषों दोनों को समान रूप से शिक्षा दी जानी चाहिए और उनकी शिक्षा में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए। उपयोगी ज्ञान के अन्तर्गत टैगोर स्त्रियों तथा पुरूषों की शिक्षा में अन्तर मानते है क्योंकि उनका यह विश्वास था कि स्त्री एक माता, बेटी तथा बहन होती है और इसके लिए उसे शिक्षित करना अत्यन्त आवश्यक होता है इसलिये टैगोर स्त्रियों को पाक–कला, सिलाई–कढ़ाई तथा कला–कौशल की शिक्षा देने पर बल देते थे इसके अतिरिक्त टैगोर स्त्रियों के सर्वांगीण विकास के लिये व्यायाम, खेलकूद तथा समाज सेवा को भी आवश्यक मानते थे।

टैगोर वैयक्तिक दृष्टिकोण के साथ–साथ स्त्रियों को सामाजिक दृष्टिकोण से भी शिक्षित करने के पक्ष में थे क्योंकि उनका यह विश्वास था कि भारतीय समाज की प्रगति तब ही सम्भव है जब स्त्री शिक्षा को भी पुरूष की शिक्षा के समान ही महत्व प्रदान किये जाये जिससे उनकी बौद्धिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक उन्नति हो सके। टैगोर का विचार था कि स्त्रियों तथा पुरूषों के सहयोग से ही एक नये संसार का निर्माण होता है और भारत तथा राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर स्त्री शिक्षा की आवश्यकता और महत्व को भली–भांति समझते थे इसलिये उन्होंने 'शान्ति निकेतन' में सन् 1908 में 'स्त्री–शिक्षा विभाग' की स्थापना की थी जहां स्त्रियों को उच्चकोटि की शिक्षा प्रदान की जा सके परन्तु कुछ कारणोवश एवं अन्य व्यवधान उत्पन्न हो जाने के कारण इसे बन्द करना पड़ा। सन् 1922 ई0 में टैगोर ने पुनः 'नारी भवन' की स्थापना की जो वर्तमान समय में 'नारी विभाग' के नाम से जाना जाता है। यहां स्त्रियों को भी पुरूषों के समान ही शिक्षित करने का कार्य किया जाता है तथा स्त्रियों को भी शास्त्रीय विषयों को अध्ययन करने का पूर्ण अधिकार है जिससे उनका शारीरिक, सामाजिक तथा व्यवसायिक विकास हो सके। चूंकि टैगोर का यह विश्वास था कि स्त्री को पत्नी, माता तथा समाज के निर्माता के रूप में कार्य करना होता है। अतः उन्होंने 'नारी विभाग' में स्त्रियो के

लिये गृह विज्ञान, पाक कला, कला–कौशल और सिलाई–कढ़ाई की विशेष व्यवस्था की थी। इसके अतिरिक्त रवीन्द्रनाथ टैगोर स्त्रियों को सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी प्रगतिशील, उन्नत तथा आत्मनिर्भर देखना चाहते थे इसलिये उन्होंने स्त्रियों के लिये खेल–कूद, आत्म–रक्षा की शिक्षा, व्यवसाय और समाज सेवा के कार्यक्रमों पर बल दिया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने इस विभाग में स्त्रियों के लिये संगीत शिक्षा की भी व्यवस्था की है जिससे स्त्रियों का सर्वांगीण विकास हो सके।

इस प्रकार स्त्री शिक्षा के प्रति टैगोर का दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक था। उन्होंने स्त्रियों को समाज में समानता और बराबरी का स्थान प्रदान किया है और उनकी शिक्षा–व्यवस्था में किसी भी प्रकार का भेद भाव स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने–अपने ढंग से स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया है। इन्होंने मातृ शक्ति के विकास को जनजीवन के विकास का आधार माना व इस दिशा में विशेष प्रयत्न किया है कि देश के सभी स्त्रियाँ शिक्षित हो अपने जीवन के मूलभूत आवश्यकताओं को समझ सकें, अपनी आने वाली पीढियों के प्रति अपने दायित्वों की पहचान कर सकें, तथा वे राष्ट्रीय स्तर पर मानवता के पूर्ण विकास में अपनी भागीदारी दर्ज करा सकें।

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची</u> :–

1. ओड, डॉ0 लक्ष्मीकान्त (1973), शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
2. इलाचन्द, जोशी (1956), विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, भारतीय विद्याभवन, इलाहाबादः राजकमल प्रकाशन, संस्करण।

एस0 एविनेरी, (1968), द सोशल एण्ड पॉलीटकल थॉट्स ऑफ कार्ल मार्क्स, कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।